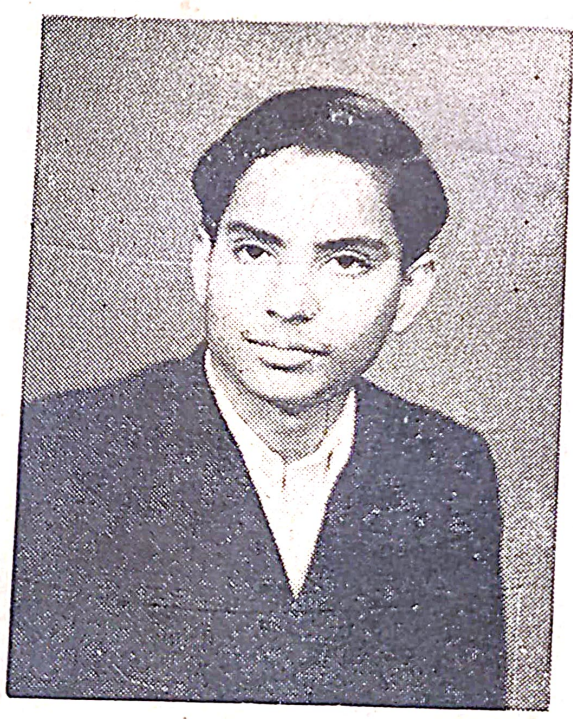


विप्लव

मैथिली क सर्वोत्तम मासिक



एक प्रति
 चालीस
 आना

AIDEHI 25 N. P. पचोस सबका पैसा अक्टूबर १९७२ २५ सबका

[बिहार सरकार द्वारा स्मृत, कालेज एवं पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत]

सम्पादक

प्रो० श्रीसुरेन्द्रभा
'सुमन'
श्रीसुधांशु 'शेखर'
चौधरी

प्रो० श्रीकृष्णकान्त
मिश्र

एक प्रति २५
विशेषांक ५०
वार्षिक ३)
आजीवन ५१)
संरक्षक १२५)

श्रीकृष्णकान्तमिश्र
द्वारा दरभंगा प्रेस
कम्पनी (प्रा०) लि०
दरभंगामे मुद्रित
एवं प्रकाशित

प्राप्ति-स्थान
वैदेही समिति,
लालबाग, दरभंगा

कथा-पिहानी

प्रेम परीक्षा
अपने के ?
औनपी

श्रीकामिनीदेवी 'आशा' ३७१
श्रीचन्द्रमोहनम्हा ३८४
श्रीवल्लराम ३४४

एकांकी

दिल्लीक इमार

श्रीमण्डिपन्न ३७४

आलोचना-लेख

दाम्पत्य : शास्त्रक दृष्टिमे
दुःखसँ मुक्तिक उपाय

श्रीत्रिलोकनाथमिश्र ३६५
श्रीधीरेन्द्र ३७६

कविता

आसिन
गीत
मोहनजीक पत्र

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' ३६३
श्रीमायानन्द
श्रीमहारुद्र

स्तम्भ

यत्र-तत्र-सर्वत्र
१९५६क वार्षिक सूची

यात्री ३६०
३६३

मुख-चित्र : पटना विश्वविद्यालय मध्य एहि वर्ष बी. ए. (आनर्स) मैथिलीक परीक्षामे सर्वप्रथम उत्तीर्ण छात्र-कोइलखवासी श्रीगोनूभाक सुपुत्र श्रीसुधीरकुमारभा । हिनक छ्ये छ आता श्रीमिहिरकुमारभाजी 'आइ. पी. एस्. छथि एवं तनिक अनुज प्रोफेसरश्रीशंकर-कुमारभा मिथिला कालेजक सुप्रतिष्ठित प्राध्यापक छथि ।

आवश्यक सूचना

- (१) अग्रिम अंक १०० पृष्ठक आलोचना-विशेषांक हैत । आब अंक नवम्बरक अन्तमे जे सभ १९५७क चन्दा देने छथि तनिकहि टा पठौल जेतन्हि ।
(२) गत अगस्त माससँ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन, दरभंगाक ५) पंचटकही सदस्य सभकेँ सेहो नियमानुसार 'वैदेही'क प्रति १ वर्ष धरि पठौल जा रहल छन्हि ।

—मन्त्री, वैदेही समिति, दरभंगा ।

गीत

श्रीमायानन्दमिश्र

रूपक : गंगा मे उबडुब अछि आइ हमर मन-प्राण
भेटल, जकर प्रतीक्षा मे,
युग-युग सँ प्यासल आँखि
कल्पनाक नभ मे उड़ि गेल' छि
मन — पंछी केर पाँखि,
सूनि रहल छी आइ अकल्पित निर्धुनि निर्लय गान ।
मनक क्षितिज पर उगल
रूप—रवि, चान सनक निस्तब्ध
तनक सरोवर मे पुलकित अछि
यौवन केर जलजात,
हृदयक सूतल अभिलाषा करइत अछि स्वर संधान ।
आम मंजरित तोहर साँसमे
दूबल मलय — बसात
रोम-रोम मे सिहरण भरइछ
छूबि — छूबि केँ गात
तोहर दृष्टि निक्षेप करै अछि धड़कन केँ गतिमान ।
नयनक धोखड़ल मैल
मुदा हे ! बढ़ले मनकेर प्यास
पाथर सन पौरुष फेकइत अछि
छन — छन करुण निसास
मोन रहत अधरक ई सद्यस्नाता सन मसुकान
मन—सागरमे युग—युग धार हो ।
उठते सुधिक हिलोर
'हमर अभाग' अहे मनरञ्जनि !
'हमर दुःखक नहि ओर'
रूप अर्चनामे अपरिचिते ! शत शत कोटि प्रणाम ।

दाम्पत्यः शास्त्रिक दृष्टिमे

माया यदि नरकक अधीन हो, अर्थात् मायाक शुकाव यदि नरक दिस हो तँ सृष्टिक प्रवाह कमशः सकुचित होइत - होइत एक दिन प्रलयावस्थापर पहुँचि जाइत अछि आर नरक (पुरुष) यदि माया (स्त्री)क अधीन हो, अर्थात् नरकक शुकाव यदि माया दिस हो तँ सृष्टि प्रवाह कहियो बिरामकेँ नहि पाबि सकैछ ।

सूर्य और चन्द्रमाक पारस्परिक पार्थक्यपर गम्भीर गवेयणा कयलासँ सहज-रूपमे बुझवाक योग्य भऽ जाइत अछि जे सूर्यमे समत्व शक्ति प्रधान छैन्हि, ओ पुरुष शक्ति थिक तथा ओकरा बुद्धितत्त्वसँ प्रगाढ़ सम्बन्ध रहवाक कारणेँ आधुनिको वैज्ञानिक लोकनि बुद्धिक अंश मानैत छथि । ‘धियो यो नः प्रचोदयात्’ इत्यादि नित्यानुष्ठापक वचनक द्वारा आर्य धर्ममे ई अनादिकाल-हिसँ प्रतिपादित अछि अतः दिवसाधिप सूर्यक शक्ति बुद्धि प्रेरक थिक, जकर प्रभाव पुरुषपर अधिक पड़ैत छैक; एही कारणेँ पुरुष, बुद्धि प्रधानक, विचारशाल, प्रत्यक्षदर्शी, तेजस्वी, रूतप्रकृतिक एवम् प्रभावी होइत अछि ।

चन्द्रमामे वैषम्यात्मक शक्ति प्रधान छैन्हि, आ ‘स्त्री शक्ति’ थिक तथा ओकरा मनसँ प्रगाढ़ सम्बन्ध रहवाक कारणेँ मनक अंश पाश्चात्य और पौरस्त्य सब विद्वान् मानैत छथि । आर्यजाति तँ ‘चन्द्रमामनसो जातः’ ‘मनश्चन्द्रे निलीयते’ इत्यादि शास्त्रिक तथा विज्ञानक बले सदासँ मानैत आयल अछि । अतः

रजनीपति चन्द्रमाक शक्ति मनःप्रेरक थिक । जकर प्रभाव स्त्रीपर अपेक्षाकृत अधिक पड़ैत छैक, एही कारणेँ स्त्री मनः प्रधानक, मायामयो, लावण्यपूर्ण, कोमलता तथा चञ्चलतासँ सम्पन्न और “प्राणा हवाएते प्रस्कन्दन्ति ये दिवा रत्या संयुज्यन्ते” इत्यादि उपनिषदादिवाक्यक आदेशानुकूल रात्रिअहिक बले सृष्टिकारिणी होइछ ।

एहि ऋद्धमन्त्रक अनुसार जहिना प्रतिमासक अमावास्यामे सूर्यमण्डलक मध्य-
केन्द्रक सीधा नीचाँ रहलहि सन्ताँ चन्द्रमा, सूर्यक तेज पाबि तेजस्वी भय
अपन जलीय परमाणुपुञ्जक सम्मिश्रणें अमृतमय ओहि तेजक द्वारा नाना
पदार्थक जन्मदाता होइत छथि, तहिना स्त्री, पुरुषक तेज (शुक्र)केँ मानि ।
एहि बातकेँ —

अमोऽहमस्मि सा त्वं सा त्वमस्यमो अहम् ।

सामाऽहमस्मि ऋक् त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम् ।

विवाह प्रकरणक एहि मन्त्रसँ तँ आलङ्कारिक रूपेँ, किन्तु ओकरे अग्रिम—
“तावेहि विवहावहै सह रेतोदधावहै०” इत्यादि मन्त्रसँ वेदो स्पष्ट ऋद्ध देने
अछि । अतएव स्थूल और सूक्ष्म दूहू भावमे स्त्री और पुरुषक परस्पर पार्थक्य
बहुत किछु छैक, जकर सविस्तर व्याख्या पनरहे मिनटमे उपसंहरणीय लेख
द्वारा असम्भव अछि । आकार-प्रकार, मनःशक्ति तथा बुद्धिशक्तिक भेदपर
विचार कयलासँ ई पार्थक्य बहुधा ध्यानमे आवि सकैत अछि । एहि पृथक्
पृथक् रूपमे अवस्थित स्त्री-पुरुषक विषम-समशक्तिकेँ विवाहक द्वारा एक
सूत्रमे बान्हि अपूर्णसँ पूर्ण भय अपन केन्द्रित शक्ति पारस्परिक सहायतासँ
क्रमिक सर्वांश—उन्नतिक मार्गपर आरूढ़ होएवे आर्य-जातिक प्रधान लक्ष्य
अनादि कालसँ अछि ।

आर्यजातिक वैवाहिक विधि “मैथुन्यः कामसम्भवः” नहि, प्रत्युत वेदोक्त
सोढ़ह संस्कारमेसँ चूड़ाकरण पयन्त संस्कार, गर्भवासजन्य दोषक नाशक थिक ।

‘एवमेनः शमंयाति गर्भदोष समुद्भवम्’ — याज्ञवल्क्य

शिक्षा द्वारा आत्माक संस्कार बढ़ैछ, अतः उपनयन-वेदारम्भ प्रभृति कर्म,
संस्कार-वर्द्धक थिक । परन्तु केहना तेज बनाओल शस्त्रमे यदि मुट्ठी नहि
दियौक, कोदारि-कुड़हरि-खन्ती आदिमे बेँट नहि लगबियौक तँ ओ शस्त्र वा
ओ कोदारि-कुड़हरि-खन्ती आदि पूर्णाङ्ग नहि रहबाक कारणेँ अकार्यक
रहैछ, तहिना शिक्षा पाबि गुरुकुलसँ आवि स्नातक यदि विवाह द्वारा स्त्री
संग्रह नहि करौ तँ अपूर्णाङ्ग रहि गेलासँ वस्तुतः ओ अकार्यक रहैछ । अतएव
सूर्य और चन्द्रमाक सम-विषम शक्तिक परस्पर सहयोगेँ अर्थात् सूर्य दिव-
सक अधिपति भय हुनके तेजसँ तेजस्वी चन्द्रमा रातुक अधिपति भय जहिना

सृष्टि-चक्रकेँ सुचारुरूपेँ चलवैत छथि, तहिना पुरुष अपन सम शक्तिक द्वारा बाह्य वक्तव्यक और स्त्री पुरुषहिक तेजसँ तेजस्विनी भय अपन विषमशक्तिक द्वारा घरक कर्त्तव्यक पालन करैत—दूनु अपने-अपन केन्द्रमे रहि परस्परक सहयोगसँ सृष्टि-चक्रक सम्पादन करैछ । तात्पर्य ई जे सृष्टि प्रवाहक क्रमोन्नतिक हेतु उपर्युक्त उभयात्मक शक्तिक परस्पर सहयोग अत्यन्त आवश्यक छैक । विवाहक द्वारा ओही दूहु पृथक्-पृथक् शक्तिक एकीकरण होइत अछि । शरीरमे, अन्तः करणक परस्पर भिन्न-भिन्न गुणवान बुद्धिस्वरूप और मनः स्वरूप परिधिक पारस्परिक संयोगेँ पूर्णाङ्गता होइत छैक तँ ई मानऽक पड़त जे बुद्धिशक्तिप्रधानक पुरुषमे मनःशक्ति प्रधानक स्त्रीक संयोग भेलहि उत्तर पूर्णाङ्गता अवैत छैक, अन्यथा नहि । साधारण स्मरण अधैर्य—साहस—लज्ज साधनमे तत्परता—मौलिक सिद्धान्तक अवलम्बन-आदि पुरुष द्वारा और स्मरणशक्तिक प्रचुरता-अति धैर्य—विचार सहन—त्याग-आत्मसमर्पण-आदि स्त्री द्वारा सम्पादित होइत अछि ।

एहि विषममे पाश्चत्य तथा पौरस्त्य सकल विद्वान्क ऐकमत्य छैन्हि । एही सब भावकेँ ध्यानमे राखि बृहदारण्यक-उपनिषद्मे कहल गेल अछि—

सोऽनुवीक्ष्य नान्यदात्मनोऽपश्यत्, सवै नैव रेमे,
तस्मादेवाकी न रमते । स द्वितीयमैच्छत् सहैतावा-
नाम यथा स्त्रीपुमांसौ सम्परिष्वक्तौ । स इममेव त्मानं-
द्वेधाऽगमयत् ततःपतिश्च पत्नी चाभवताम् । तस्मादिद-
मद्वर्तुगलमिव ह्य इति स्माह याज्ञवल्क्यः । तस्मादय-
माकाशः स्त्रिया पूर्यतएव तांसमभवत्ततोमनुष्या अजायन्त

अर्थात्—सृष्टिसँ पूर्व परमात्मा अपनासँ अतिरिक्त किछु नहि देखि रमण नहि कऽ सकलाह, कियैक तँ रमण एकसर नहि भऽ सकैत छैक । अतएव ओ दोसराक इच्छा अर्थात् स्त्री पुरुष जकाँ परस्पर सम्पृक्त होएबाक सङ्कल्प कय-
लैन्हि और तदनुसार अपने आत्माक दू विभाग कय आधासँ पुरुष तथा आधासँ स्त्रीरूप बनलाह । एही कारणे ई शरीर आधा पुरुष और आधा स्त्रीक जोड़ा, द्विदल (दालि) जकाँ यिक, जे विवाहक द्वारा स्त्री संग्रहसँ सम्पन्न भय सृष्टि परम्परा चल्यबामे क्षम होइछ । एही उपनिषद्क आंशिक अनुवाद मनु करै छथि—

द्विधा इत्थाऽऽत्मनो देहमर्द्धेन पुरुषोऽभवत् ।

अर्द्धेन नारी तस्यां स विराज मयुजद्विभुः ॥

अर्थात् 'सृष्टिक आरम्भ कालमें परमात्मा, अपन शरीरकेँ दू टुक कैलन्हि,—
आधासँ पुरुष और आधासँ स्त्री बनि गेलाह तथा ओही स्त्रीमें विराट् सृष्टि
कैलन्हि ।'

ओहि दूहू भागमेंसँ कोन भाग पुरुषक ओ कोनभाग स्त्रीक से देवीभागवतक—
स्वेच्छामयः स्वेच्छया च द्विधाऽपी बभूवह ।

स्त्रीरूपो वाम भागांशो दक्षिणांशः पुमान्मृतः ॥

एहि वचनसँ स्पष्टे अछि । उपर्युक्त वचन सबपर विचार कयलासँ सिद्ध
होइछ जे विषम शक्तिक समशक्तिमें सम्मिलनं प्रलय कहवैछ और अपन-
अपन पूर्वोक्त सक्रिय शक्तिसँ आधा-आधा अंशेँ पृथक् हैवे सृष्टि कहवैछ ।

भिन्न-भिन्न गुणवाला आधा-आधा अंशक पारस्परिक सम्मिलन-द्वारा संघर्षक
तथा तकरा द्वारा सृष्टिक समीचीनता न्यायोचिते मानऽक पड़त ।

व्यङ्ग्यरूपसँ सारांश ई बहराइ अछि जे स्त्री मायारूपा और पुरुष ब्रह्मरूप
बूझऽक चाहो ।

आब माया यदि ब्रह्मक अधीन हो, अर्थात् मायाक भुकाव यदि ब्रह्म दिस हो
तँ सृष्टिक प्रवाह क्रमशः सङ्कुचित होइत-होइत एक दिन प्रलयावस्थापर पहुँचि
जाइत अछि और ब्रह्म (पुरुष) यदि माया (स्त्री)क अधीन हो, अर्थात् ब्रह्मक
भुकाव यदि माया दिस हो तँ सृष्टि-प्रवाह कहियो विरामकेँ 'नहि' पाबि
सकैछ ।

अर्थ शास्त्रमें एही तात्पर्य स्त्रीक अधीनतामें पुरुषकेँ रहब सदाक हेतु अनुचित
मानि पुरुषहिक अधीनतामें स्त्रीकेँ रहब उत्तम कहल गेल अछि ।

स इममेवात्मानं द्वेधाऽपातयत्

एहि बृहदारण्यकक तात्पर्यो सैह थिक । अर्थात् परमात्मा स्वेच्छासँ जे अपन
शरीरक दू भाग कैलन्हि, ताहिमें वाम भाग स्त्री थिकि त ओ परमात्मैक
अंशरूपा कहाओत, दक्षिण भाग जे पुरुष से तँ ओ स्वयं थिकाहे ! तेहना
स्थितिमें स्त्रीकेँ पुनः अपन उद्भव स्थानस्वरूप परमात्माक प्राप्ति ओही दिस
भुकलासँ भऽ सकैत छैक, अग्निज्वालाकेँ सूर्य दिश, नदी आदिक जलमात्रकेँ

समुद्रदिस प्रगतिशील देखि के नहि मानत ? जे 'कोनहुँ पदार्थक मुकाव अपन विभाजक केन्द्रहि दिस स्वभावसिद्ध थिकैक ओर तहिचन आ तन्मय भैयो सकैछ !'

मुक्तिक लक्षण 'स्वरूपावस्थान' तैखन सम्भवो । अतएव आर्य धर्मग्रन्थमे सबठाम स्त्रीकेँ मन, वचन, शरीर, प्राण, बुद्धि तथा आत्मा—सब प्रकारसँ पतिरूपेण कल्पित अपन अर्द्ध शरीर स्वरूप पुरुषमे सतत लीन रहबाक आदेश देल गेल अछि । ओही आचरणक नाम 'सतीधर्म' थिक ॥

स्त्रीजाति महामायाक अंश थिकि तेँ ओ अपन सहजप्रेम, मृदुता, ममत्व आदिगुणकेँ अपन केन्द्र स्वरूप साकार पतिदेवमय ब्रह्ममे जतेक बिलीन करति ततेक ओकरा हेतु स्वरूपावस्थान स्वरूप मोक्ष निकटतम कहऽक चाही ।

अतएव मनु—“पाणिग्राहंस्य साध्वी स्त्री जीवतो वा मृतस्यवा ।

पतिलोकमभीप्सन्ती नाऽऽचरेत्किञ्चिदप्रियम् ॥

दुःशीलः कामवृत्तो वा गुणैर्वा परिवर्जितः ।

उपचर्यः स्त्रिया साध्व्या सततं देववत्पतिः ॥

ई कहि 'भुङ्क्ते भुङ्क्तेऽथवा पत्यौ दुःखिते दुखिता च या ।

मुदिते मुदिताऽत्यर्थं प्रेषिते मलिनाम्बरा ॥

सुप्ते पत्यौ च या शेते पूर्वमेव प्रबुध्यते ।

नाऽन्यं कामयते चित्ते सा विज्ञेया पतिव्रता ॥

ई सतीक लक्षण देखौने छथि । महर्षि याज्ञवल्क्य—

आर्त्ताऽऽर्त्ते मुदिते हृष्टा प्रेषिते मलिना कृशा ।

मृते मृता च या पत्यौ सा स्त्री ज्ञेया पतिव्रता ॥

एहि प्रकारक पतिव्रताक लक्षण कैने छथि । एहि ठाम—‘मृते मृता’ कहबाक तात्पर्य ई जे जाहि अवस्थामे अपन उपास्य पतिदेव रहथि, सतत तल्लीन रहबाक कारणेँ ताही अवस्थामे स्त्रीकेँ रहऽक चाही ।

नारी भर्तारमासाद्य यावन्न दहते तनुम् ।

तावन्न मुच्यते साहि स्त्रीशरीरात्कथञ्चन ॥

एहि विष्णुस्मृतियहुक वास्तविक अर्थ यह थिक जे भक्ताकेँ पाबि अनुक्षण हुनके चिन्तना करैति नारो स्त्रीयांनिमे तावते धरि रटे अछि, यावत धरि ओकर पञ्चभौतिक शरीर दग्ध नहि भै जाउक, तदनन्तर तँ पतिदेवक प्रति अनन्तचिन्तनासँ सिद्ध तन्मयीभावक प्रभावेँ ओ पतिस्वरूपा भय स्त्रीस्वरूपस सुतरां मुक्त होएबे करति ।

उपासक जन, उपास्यक अनुक्षण तन्मयीभावसँ चिन्तना कयलहि सन्तौँ उपास्योपासक भावस मुक्त भय उपास्यरूप बनि सकै छथि ।

यथा तगेर्मूल निषेचनेन तृप्यन्ति तत्स्कन्धभुजोगशाखाः ।

पाणोपहारैश्च यथेन्द्रियाणि तथैव सर्वाङ्गं मन्युतेज्या ॥ —श्रीमद्भागवत

आशय—‘वृक्षक जड़िमे जल दैत रहलासँ जेना ओकर फेण, डारि, पात आदिमे अपनहि हरिअरी आवि जाइत छैक तथा प्राणकेँ तृप्त कयलासँ जेना सम्पूर्ण इन्द्रियमे तृप्ति पहुँचैत छैक, तहिना एक परमात्माक पूजासँ सबक पूजा सम्पन्न होइत अछि ।

सत्य भक्त, तन्मयीभावक अपेक्षया उपास्य-उपासक भावहिकेँ उत्तम बुझैत छथि ।

रामचन्द्रक वियोगमे विह्वला सीता अशोक वाटिकामे त्रिजटासँ पुछलथिन्ह— ‘हे त्रिजटे ! फिगुर कीट जाहिरूपेँ कुम्हरा (हरिअर भम्हरा)क प्रतिक्षण ध्यान करैत तत्स्वरूप बनि जाइत अछि, ताहीरूपेँ हमहुँ सदिखन अपन पतिदेवक ध्यान करैति यदि पति देवे बनि जाइ तखन तँ हमरा दाम्पत्य सुख दुर्लभे भऽ जाएत ?’ एकर उत्तरमे त्रिजटा कहलकैन्हि जे ‘हे मिथिलाधिराज कन्ये ! तैयो अहाँकेँ कोनो चिन्ता नहि, कारण रामचन्द्रो तँ ताहीरूपेँ सदिखन अहीँक टा ध्यान कऽ रहल छथि ! यदि अहाँ हुनक ध्यान करैत राम बनि जायब तँ ओहो अहाँक ध्यान करैत सीता बनियेंटा जेताह, फेर तँ सीतारामक दाम्पत्य रहबे करत ।’

प्रेम परीक्षा

हम फेर पुछलियन्हि—भौजी सत्य कहूँ त, लाल भाइ जे फराक रहैत छथि तेँ अहाँकेँ दुःख नहि होइत अछि ।

भौजी बिगड़ि क उत्तर देलन्हि—हँ, एहन विश्राम आछ त परीक्षा लै लिअ ।

भौजी ओना त' सहोदर भाइक पत्नी नहि छलीह किन्तु बुझाईत छली ओहूँसँ बढि कै । पहिने हम गाम बड़ कम आबी, आ जखन अयबो करी त मात्र २।४ घंटा ठहरी आ आपस भै जाइ । मने नहि लागै । हो, जेना गाम, गाम नहि, जेलखाना अछि ।

जहियासँ लाल भाइक द्विरागमन भेल तहियासँ हमरो प्रोग्राम बदलि गेल । पहिने कम आबी किन्तु आब आबी बेशी । पहिने अबै छलहुँ त ठहरी २।४ घंटा किन्तु आब २।४ दिन । एतावता हमर प्रोग्राम ठीक पहिनेक उनटा भै गेल । एक मात्र कारण छली भौजी ।

हम मधुबनीमे पढ़ैत रही तँ लोहा पड़ै छल तिनिये कोश । आ तँ हमरा अबैमे असुविधा नहि होअय । मासमे दू बेर तऽ निश्चिते । हमर लालभाइ रहथि सकरीक मीलमे । तँ हुनका छुट्टी होइन्ह कम । कोनहुना बेचारे नुकाचोराकै मासमे कोनो दिन किछु काल लेल चल आबथि ।

भौजीकेँ लाल भाइसँ अपरिमित स्नेह छलन्हि । ओना त सभ पति पत्नीसँ बड़ स्नेह करै अछि किन्तु ई दू डिग्री आगू छलीह । यद्यपि भौजी छिपैबाक बड़ कोशिश करथि किन्तु प्रगट भ' जाइन्ह । हुनका जखन पुछितियन्ह त ओ

चट द कहितथि—“जतेक दूर रहथि, हमरा ततेक नीक ।” हम कैक दिन ई प्रश्न केलियन्ह आ हुनक जबाब यह होइत छल ।

आइ शनि छलै । हमहुँ गाम ऐलहुँ आ अबैत देरी भौजीसँ भेंट करै गेलहुँ उतरबरिया घर । आइ जखन हम घर गेलहुँ त भौजीमे किछु परिवर्तन भै गेल छल । जत ओ पहिने हँसैत रहै छली ओतै आइ आँखिमे नोर भरने कनैत छली । हम किछु आश्चर्यित भै गेलहुँ । पुछलियन्हि—“भौजी एना कियै ? लाल भाइ मोन पड़लाह अछि ?”

“हरदम अहाँके हँसिये, रहै अछि; पढ़ आ बाबू ।” भौजी बनावटी हँसी हँसैत बजली—“जेहन ओ दूर रहथि, हमरा तेहन नीक ।”

हम फेर पुछलियेन्ह—“भौजी सत्य कहू त, लाल भाइ जे फराक रहैत छथि से अहाँके दुःख नहि होइत अछि ?”

भौजी बिगड़िकै उत्तर देलन्हि—“हँ, विश्वास अछि त परीक्षा लै लिअ ।”

हम चाहलहुँ जे एक दिन एकर परीक्षा ली अवश्य, सुयोग अयलासँ । फेर पुछलियेन्ह—“भौजी लाल भाइक कोनो पत्र आयल अछि ? कहिआ धरि औताह से कहि सकैत छी ? बहुत दिन भै गेल भेंट भेना ।”

तै पर भौजी तुनकि कऽ जबाब देलन्हि—“हँ, परसूए त ऐलै । लिखने छथि जे १६ ता० क आयब ।

हम हुनकर बात कटैत उत्तर देलियेन्ह—“हँ-हँ, बूझल । अहाँक कहैक यह ने अर्थ जे आइ २१ ता० थीक आ ओ लिखने छथि १६ ता० कक नाम । अर्थात् नहि अओता । परन्तु घबराउ जुनि, एबे करताह ।”

साँझ खन हम साइकिल धैल ।

सौराठक सभागाछी टपिते रही कि देखल लाल भाइ डेग पर डेग दैत चल आवि रहल छथि । हम साइकिलसँ उतरि हुनका प्रणाम कैल । ओ बड़ जोर कैलन्हि तखन हुनकहि संग धैलहुँ ।

हमर आ लाल भाइक मुँह, हाड़-काट, रूप-रंग एके छल । मात्र अन्तर एतवे जे ओ रहथि कने लजकोटर हमरा सँ बेशी, आ हुनकर केश खूब ओँठिया नहि छलन्हि । अहीसँ लोक हमरा हुनका मे फर्क बुझैत छल ।

राति भोजनोपरान्त लाल भाइ दलानपर स्लीपींग चेयरपर आराम कै रहल छलाह, आ प्रतीक्षामे रहथि जे कखन सभ आराम करै जायत जे हमहुँ अपन शयन-कक्ष जायब । एतवहिमे हम दलानपर एलहुँ आ लाल भाइ लग जाक स्थिर आ मन्द स्वरे कहलियेन्ह—“लाल भाइ, हमरा एकटा हास्य रचवाक अछि, किछु कालक समय देब । हम जखन भौजीक कोठली जाइ त अहाँ केवाड़ी लगसँ सभटा दृश्य देखैत रहब ।

लाल भाइ मुस्काइत कहलन्हि—“अच्छा ।”

हम कहलियैन्ह—“अहाँ कने अपन हाफसर्ट आ स्वीटर दिअ तऽ ।”

ओ तुरत दूनू चीज खोलि क’ द देलन्हि ।

भौजी जाहि समयक प्रतीक्षा करै छलीह से पूर्ण भ गेलन्हि । ओ पलंगसँ उतरि देवालमे सटि धैलन्हि अपन मौंगियाही चालि । हमरा त मोने-मोने गुदगुदी लागल । कोनो रूपे अपन हँसोकेँ रोकैत हम जाकेँ बिछौनपर सूति रहलहुँ । बहुत काल धरि भौजी प्रतीक्षा कैलन्हि, तखन ओ डिबिया मिक्का पलंगपर आबि हमरा देह डोला-डोला कै कहै लगलीह—“हमर कोन अपराध । हमरासँ कियै रूसल छी ?”

हम अपनाकेँ सँजत करैत आ अपन स्वर लालभाइ जकाँ बनबैत उत्तर देलियैन्ह—“हँटू, हमरा ई लटारहम नीक नहि लगैत अछि ।” ई कहि हम हाथ भकभोरि देलियन्हि । ओ पलंगसँ नीचा उतरि लगली कानय । फेर हम कहलियन्हि—“हमरासँ फराके रहू ।”

ओ फेर कहलन्हि—“नाथ, हमर दोष कोन ? यदि भूल-चूकसँ कोनो दोष भ गेल हुए त क्षमा क दिअ ।”

हम मोने-मोन हँसैत आ ऊपरसँ गम्भीर बनि कहलियन्हि—“एखन तऽ एतेक अलाप पसारैत छी आ नारायणकेँ जे कहै छलियन्हि ?”

ओ कातर स्वरसँ बजली—“हम पढ़ुआ बाबूकेँ कहाँ किछु कहलियैन्ह अछि । यदि आव हमरापर अहाँकेँ विश्वास नहि हो तऽ हम सपथ खाइ छी जे हुनकासँ नहि बाजब ।”

हम फेर कहलियैन्ह—“अहाँ जे हुनका कहैत रहियन्हि हमरा द’ जे ओ जतेक दूर रहै छथि ततेक नीक ।”

ओ हमर हाथ पकड़ैत बजली—“अहाँकेँ ओ कहलन्हि तै पर विश्वास भ गेल ? हुनका तँ मूठे कहलियैन्ह । हमरा त यैह नीक लगैत अछि जे अहाँ सदिखन हमरे लग रही । हमरा त अहाँ लेल मोन बड़ व्याकुल रहै अछि ।

ई कहि भौजी हमरा अपन बाहु-पाशमे आबद्ध करै चाहलन्हि, तखन ने हमरा रहल गेल आ ने लालभाइकेँ । हम पलंग परसँ उतरैत ठहाका मारैत कहलियैन्ह—“भौजी अहाँक परीक्षा ल लेल ।”

ओम्हर लालभाइ सेहो ई नाटक देखि हँसैत-हँसैत लोट-पोट भै गेलाह ।

दिल्लीक इनार

बादशाह, महाराजा, वजीर, सिपहसालार और सैय्यास हमेशा पैदा लेते और मरते हैं। मगर शायर और फकीर जमाने और जमीन की खुशकिस्मती से, इत्तफाक से ही पैदा होते हैं और मरते कभी नहीं।

पात्र

शाहन्शाह : दिल्लीक बादशाह
सिपहसलारे जंग : प्रधान सेनापति
कवि विद्यापति : मिथिलाक महाकवि
महाराज शिवसिंह : मिथिलाक वन्दी महाराज

रूपसी रमणी, चोवदार, हब्स गुलाम ओ दरवारी आदि ।

[उद्यानक बीचक ओ इनार पुष्प सागरक बीच गोल द्वीप जकाँ बूझि पड़ैत छैक । चारुकात नाना प्रकारक लता-भाड़ी पल्लवित ओ पुष्पित देखाय दैत छैक । कने हँटिकै संगमर्मरक विशाल फाटकक शिखर दृष्टिगोचर भै रहल छैक । चारुकात सशस्त्र सन्तरी ठाढ़ छैक जेना कोनो महान व्यक्तिक अगवानीक प्रतीक्षामे हो ।]

चोवदार—(नैपथ्यसँ) शाहंशाह, तख्ते दिल्ली, नूरे इस्लाम तशरीफ ला रहे हैं ।

[आगू-आगू बादशाह, ताहिसँ कने पाछू हुनक सिपहसलारे जंग, सिपहसलारक पार्श्वमे, धोती मिर्जई आ पाग पहिरने, ललाटपर चानन त्रिपुण्ड्र ओ ठोप धारण कैने कवि विद्यापति आ संग-संग चारि-पाँच टा दरवारी आ उच्च पदाधिकारीक प्रवेश । सब क्यो ओहि इनार लग आबिकै ठमकइ छथि]

शाह—(कवि विद्यापतिसँ).....जगमग करते फूलों के बीच ऐसी खुशनुमा जगह शायरी के लिये और कौन सी हो सकती है ?

कवि विद्यापति—अन्तरक फूल मुस्कुराइत रहै तँ सबठाँ काव्य-साधना चलि सकैत छैक ।

शाह—तो शायर, आपका दावा है कि जो चीज आपके सामने नहीं है उसे भी अपनी रुहानी आँखों से देख कर, उसके बारे में आप शायरी कर सकते हैं ?”

कवि—निसन्देह !

शाह—(खिसिया कै) अगर आपका यह दावा गलत साबित होगा तो इस गुस्ताखी की कीमत आपको अपना सिर देकर चुकानी होगी । याद रखें ।

कवि—(दड़तासँ मुस्कुराइत)...स्वीकार अछि ।

[शाहक आंखि क्रूरताक संग चमकइ छैन्ह । ओ कविक प्रशान्त मुखमंडल देखिकै अधिक सुनगि जाइत छथि ।]

शाह—(हुकमक स्वरमे सिपहसलारसँ)...तो मिथिला के इस मशहूर शायर को, रस्सियों से जकड़ कर, कुएँ में आधी दूरी पर लटका दो । फिर इनके शायरी का अन्जाम हो ।

[दूटा दैत्याकार हवशी, सिपहसलारक संकेतसँ आगू अवैत अछि । ओकरा हाथमे रस्सो छैक । ओ सब कविक डांडमे रस्सी जकड़िकै, दूनू पार्श्वसँ दूटा नाम-नाम रस्सी बन्हैत छैन्ह । कविक माथक उपरक सोझहे ओहि दुनू रस्सीमे दूटा गोरह लगवैत छैक जे ओकरा पकड़िकै कवि लटकल ठाढ़ रहथि, मुँह भरे उलटि नहि जाथि । पुनः हुनका उठाकै डोलजकाँ नहुजें-नहुजें इनार में खसवैत छैन्ह ।]

एकटा दरवारी—(मुस्कुराइत) शायर को जरा धीरे से नीचे गिराना । यह न हो कि बदकिस्मत शायर रस्सियों के टूट जाने से नीचे पानी में गिरकर पानीके बुलबुलों से अपनी शायरी सुनाने लगे ।

शाह—(लहरापर चाढ़िकै इनारमे हुलकी दैत)...बस, शायर को आधी दूरीमें लटके रहने दो, (सिपहसलार आ दरवारी दिस ताकि कै हँसैत) अब शायर को तवियत आये तो सिर नीचे झुकाकर आइना जैसे पानी में अपना मुँह देखे, नहीं तो सिर ऊपर उठाकर आसमानके नीले नजारे का मजा लूटे । (लहरासँ उतारिकै सिपहसलारसँ) हा हा हा हा ! क्या खूब, अन्जामे मुशायरा रहा । सिपहसलार अब एक नाजनीन को बुलाओ । वह कुएँ में झुकती हुयी चीलम फूँ के । इस शायर से शायरी सुनाने कहो ।

[सिपहसलारक संकेतपर एकटा सैनिक तीव्रगतिसँ बाहर जाइत अछि । एकेक्षणमे चीलम नेने एकटा रूपसोक प्रवेरा । ओ अपना पैरक पायलकेँ बौशलसँ निःशब्द रखैत इनारक लहरापर चढ़ैत अछि आ इनारमे भुक्कैत चीलम फुकैत अछि । ओकरा कानक रत्नक भुम्भक हिलैत छैक आ प्रत्येक फूँकपर रहि-रहिकै आगिक लौ उठिकै ओहि रमणोक मुखमण्डलकेँ उद्भासित कै दैत छैक । शाह सिपहसलारकेँ किछु कहै चाहिते छथि कि इनार सँ अमृत स्वर लहरी गुंजायमान होइत ऊपर उठैत अछि ।]

सजनि निहुरि फुकु आगि,

तोहर कमल भमर देखि

मदन उठल जागि ।

[सुन्दरी चीलम फुकैत-फुकैत ओहि स्वर लहरीपर भूमैत अछि आ मस्त होइत अपन पायलसँ ताल दैत भुकले - भुकले नृत्यमान गतिसँ लहराक चारुकात घुमैत अछि ।]

शाह—(चिकरि कै) वाह वाह ! ज़रूर ज़रूर !! इस शायर ने बांसुरी बजाकर उस पागल खूँखार हाथी फजले बहादुर को काबूमें कर लिया होगा । मगर इसे बांसुरी बजाने की जरूरत ही क्या थी । इसकी अपनी ही आवाज तो बांसुरी की आवाज को भी मात देनेवाली है । यह कोई अपनी शायरी ही सुना देता तो पगला हाथी खुद व खुद काबू में आ जाता । (वने बिलमि कै) एक पगला और खूँखार हाथी काबूमें आ सकता है इसलिये कि वह जानवर है और वह इन्सान-सा स्याह दिल नहीं रखता । मगर अब मेरे अन्दर का खूँखार हाथी भी अपने इरादों से बाज आ रहा है । जिन्दगीमे पहले पहल शायरी ने मेरे संग दिल को पिघला कर पानी-पानी कर दिया (हुक्म दैछ) शायर को जल्द निकालो ।

(हव्सी गुलाम रस्सी भोक्कैत छथि । कवि बहराइत-बहराइत गबैत छथि ।)

कवि—

जों तोहें भवन जेबह भामिनि

अएबह कोने वेला

जों अइ संकट सँ जी बाँचत

होयत लोचन मेला

[शाहकेँ एकटा दरबारी हाथ चमकवैत कविताक अर्थ बुझवैत देखाय दैत छैक । शाह कविक मस्तीपर विहँसैत अछि । कवि ऊपर अवैत छथि । शाह अपनइसँ रस्सी खोलैत छैन्हि आ सब रस्सी खोलइमे लागि जाइत छैन्ह । ओ शीघ्र बन्धन-मुक्त भै जाइत छथि ।

कवि—(हँसैत)...एहेन रूपसीक मुँह जँ द्युतिमान होइत रहै तँ दिलो न इनार बड़ मोहक ।

[शाहक संग सब हँसैत अछि ।]

शाह—माफ करेंगे शायर ! आप सचमुच कोई फरिश्ता हैं । सच, यह आवाज एक फरिश्ते की हो हो सकती है जा दिल पर एक गैबी जादू डाल देती है । बोलें, आप को क्या देकर खुश करूँ ? बोलें शायर, क्या आपको किसी सूवे का सूवेदार बना दूँ ?

कवि—अपना आनन्दमय हृदय-प्रदेशक सूवेदारीसँ हमरा आनठांक सूवेदारी करैक रंचमात्रो पलखति नहि अछि ।

शाह—(वेचैचेन ज काँ) तो ऊँटों पर होरे और मोती लदवाक ! उसका कारवां आपके साथ कर दूँ ?

कवि—हम अपना होरा-मोतीकेँ दिनमे मुस्कुराइत फूलक रूपमे आ रातिमे चकमक करैत ताराक रूपमे छिरिया दैत छियैक ।

शाह—तो गुजर के लिये एक बड़ी जागीर ही दे दूँ ?

कवि—मानवक कोमल हृदय हमर सबसँ बड़का जागीर थीक ।

शाह—(आकुलतासँ) तो आप ही बतायें कि आपको क्या देकर खुश किया जाय ?

कवि—(विहँसैत) सांचे किछु दैक अछि तँ महाराज शिवसिहकेँ हमरा घुरा दिअ ।

शाह—(किछु क्षण मौन रहि हँसैत)...बिना शर्त्त लौटाता हूँ शायर । (सिप-हसलारसँ)...मिथिलाके महाराज शिवसिह को जर्क-वर्क पोशाकमे शाही मेहमां की कदर के साथ ले आओ । पचास हाथियों का हल्का, शायरको पूरे साजों-सामान के साथ नजर किये जाय । इन्हें पोशाक और हीरे का हार वक्सा जाय । (आगूमे ठाढ़ि चीलमवाली रूपसीसँ) शायर की शायरी के साथ तुम्हारे पायल की भूमक बड़ा ही दिलफरेव थी । चीलम फूँकती हुयी तुम्हारा नाच मैं उसी तर्जमे देखना चाहता हूँ ।

[सिपहसलारक प्रस्थान । नैपथ्यमे सजनि निहुरि फुकू आगिक गत बाजापर बजैत अछि आ ओ सुन्दरी चोलम फुकैत नचैत अछि । आगिक लौमे ओकर मुखचन्द्र रहि-रहि कै चमकि उठैत छैक जेना चन्नापरसँ रहि-रहि कै मेघक भोन आवरण हँटि-हँटि जाइत हो । शाह कखनो नर्तकी दिस आ कखनो कवि दिस तकैत छथि आ कवि रहि-रहि कै आकुलतास फाटकदिस तकैत छथि । नाच समाप्त होइत अछि आ नर्तकी शाह ओ शायरकेँ भुकि-भुकि कै सलाम करैत अछि । महाराज शिवसिंहक दमकैत वस्त्राभूषणमे प्रवेश । शाह आ महाराजक पारस्परिक अभिवादन । महाराज आ कवि आलिङ्गनमे आवद्ध होइत छथि ।]

महाराज शिवसिंह—(कविक आलिङ्गनसँ छुटैत वाष्प अवरुद्ध कंठेँ) कवि कंठहार !

कवि—(सजल होइत)...महाराज रवि विक्रम !

महाराज—ई कलमक तरुआरिपर, न ते ई कहियौ साहित्यक राजनीतिपर विजय रहल ।

शाह—आपू दोनों को यह दोस्ती जोरों से दिलपर असर डालतो है जिसकी याद तवारीख कभी भी नहीं भुला सकती । (कने विलमिकै एकरती जोशमे) बादशाह, महाराजा, वजीर, सिपहसलार और सैय्यास हमेशा पैदा लेते और मरते हैं । मगर शायर और फकीर जमाने ओर जमीन को खुशकिस्मता से, इत्तफाक से ही पैदा होते हैं और मरते कभी नहीं ।

महाराज—ई बहुत पैघ सत्य कहल ।

[शाह फाटक दिस बढ़ैत छथि । सब हुनका संग बढ़ैत अछि ।]

शाह—(चलैत चलैत सिपहसलारसँ) जिस जमीं ने इस फरिश्ते जैसे शायर को पैदा किया उस सरसवज जमी मिथिला की शान में फौजी बाजों के साथ किले के बुर्जपर से एकावन तोपों की सलामी दी जाय ।

[सिपहसलारक पार्श्वचर तुरहीक ध्वनिसँ संकेत दैत छैक । नैपथ्य में फौजी बाजा बजैत छैक । तोप निनाद कै उठैत अछि ।]

[पटाक्षेप]

दुःखसँ मुक्तिक उपाय

अहाँकेँ अनुभवरूपी विद्यालयमे हठी बालकक भाँति नहि रहवाक चाही, प्रत्युत् धैर्य एवं नम्रताक संग दुःखक पाठकेँ सीखवाक चाही, जे अहाँकेँ हितक लेल एवं अहाँकेँ उच्च एवं उन्नत अवस्थामे पहुँचयवाक हेतु देल जाइत अछि । कारण जे, विचार कयलास ज्ञात होइत अछि जे दुख वा आपत्ति एहि संसारमे कोनो अनन्त या अपरमित शक्ति नहि अछि किन्तु मानुषी अनुभवक एक क्षणिक अवस्था अछि एवं एहि कारणतँ जे व्यक्ति सीखय चाहैत छथि हुनका हेतु ई गुरु या शिक्षकक तुल्य अछि ।

दुःख, शोक और अशान्ति जीवनक संग लागल रहैत छैक । दुनियाँमे एहेन कोनो मनुष्य नहि अछि, जकरा हृदयमे कहियो दुःखक काँट नहि गड़ल हो, जे कहियो आपत्तिक प्रलय रूपी समुद्रमे डुबकी नहि लगौने हो और जे कहियो असह्य दुःखसँ धधकल अश्रुपात नहि कयने हो । कोनो एहेन घर नहि, जाहिमे रोग एवं मृत्युरूपी भयंकर शत्रुक प्रवेश नहि भेल हो एवं एक हृदयकेँ दोसर हृदयसँ पृथक् कय कऽ दुःख एवं शोकक घटा नहि पसारि देने हो । संसारमे जतेक प्राणी अछि, थोड़ेक बहुत सब कोनो ने कोनो दुःखसँ ग्रसित अछि । ककरो कोनो दुःख छैक, ककरो कोनो । एहि दुःखसँ मुक्ति भेटवाक हेतु अथवा ओकरा कोनो तरहें कम करवाक हेतु लोक ने जानि केहेन-केहेन प्रयत्न करैत अछि एवं सुखक प्राप्ति हेतु कोन-कोन मार्गक अवलम्बन करैत अछि । किछु लोक विषयवासनाकेँ सुख मानैत अछि । किछु लोक जिह्वाक स्वादहिमे आनन्द मनबैत अछि । बहुत लोक धन-सम्पत्ति एवं मान-मर्यादेकेँ दुनियाँक प्रत्येक वस्तुसँ उत्तम बुझैत अछि एवं राति-दिन ओकरे प्राप्ति हेतु उद्योग करैत रहैत अछि । किछु व्यक्ति एहनो अछि जे धार्मिक कार्य करबामे सुख प्राप्त करैत अछि । अर्थात् प्रत्येक मनुष्य अपन-अपन विचारानुसार भिन्न-भिन्न बातमे सुख बुझैत अछि एवं ओकरे द्वारा सांसारिक दुःखसँ मुक्त होवाक एवं सुख प्राप्त करवाक अभिलाषा रखैत अछि ।

किछु समयक लेल दुभैत छैक जे, जाहि सुखक प्राप्तिक हेतु मनुष्य उद्योग कयने छल, ओ ओकरा भेटि गेलैक । ओकर आत्मा ओहि सुखमे निमग्न भय जाइत छैक एवं क्षणमात्रक हेतु अपन कष्टकेँ बिसरि जाइत अछि परन्तु हाय ! शीघ्र कोनो ने कोनो रोग या शोक शनैः शनैः ओकरापर आक्रमण करैत रहैत छैक वा कोनो आपत्ति भक्स्मात् ओकरापर आवि जाइत छैक जे ओकर कल्पित सुखकेँ धूलिमे परिणत कय दैत छैक ।

एहि प्रकार मनुष्यक प्रत्येक सुखकेँ विच्छिन्न करवाक हेतु दुःखक तीक्ष्ण तरुआरि सदैव ओकरा मस्तकपर लटकल रहैत छैक एवं जे मनुष्य ज्ञानसँ शून्य अछि, ओकरापर खसि कय ओकर आत्माकेँ छिन्न भिन्न कय दैत छैक ।

देखू ! वच्चा चाहैत अछि जे, हम पैघ भय जाइ, शीघ्र स्त्री या पुरुष भय जाइ । स्त्री पुरुष वाल्यावस्थाक सुखकेँ स्मरण करैत अछि । निर्धन पुरुष अपन निर्धनताक बन्धनमे जकड़ल रहैत अछि एवं धनवान मनुष्यकेँ सदैव ई भय लागल रहैत छैक जे कहीं हम ने दीनताक चाँमरमे फँसि जाइ अथवा ओ अपन काल्पनिक सुखक इच्छा करैत संसारमे मारल-मारल फिरैत अछि । कहियो-कहियो आत्माकेँ ई अनुभव होमय लगैत छैक, अमुक धर्मकेँ ग्रहण कयलासँ, अमुक सिद्धान्तकेँ स्वीकार कयलासँ अथवा अमुक आदर्शकेँ हृदयमे स्थापित कयलासँ ओकरा अक्षय सुख एवं शान्ति प्राप्त होइत छैक, परन्तु कोनो भारी लोभ एवं लालचक वशीभूत आत्माकेँ वैह धर्म असत्य एवं अपूर्ण प्रतीत होमय लगैत छैक, वैह सिद्धान्त निरर्थक ज्ञात होइत छैक एवं वैह आदर्श जकर काल्पनिक मूर्तिकेँ ओ वर्षसँ भक्ति एवं उपासना कय रहल अछि, क्षण मात्रमे खण्ड-खण्ड भय कऽ ओकरा पैरपर खसि पड़ैत छैक ।

आब प्रश्न ई अछि जे, एहि दुःख एवं शोकसँ छुटकारा प्राप्त करवाक हेतु कोनो उपाय छैक ? की कोनो एहेन साधन नहि छैक जे आपत्तिक बन्धनकेँ काटि सकय ? की अक्षय सुख एवं शान्तिक विचारो करब अज्ञानता थीक ? नहि, एहेन नहि छैक । एकटा उपाय छैक जाहिसँ सदैवक हेतु दुःख, रोग एवं शोककेँ श्याम मुख कय सकैत अछि एवं एहेन अक्षय सुखक प्राप्ति भय सकैत छैक कि फेर कहियो निर्धनताकेँ अयवाक भय रहिये नहि जाइत छैक । ओ उपाय ई थीक जे, पहिने दुःख एवं अशान्तिक ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त कयल जाय एवं ओकर वास्तविकताक अन्वेषण कयल जाय ।

दुःखकेँ बिसरव एवं ओहिसँ वेसुध भय जाएव ठीक नहि थीक । आवश्यकता ई अछि जे ओकरा बढ़िया जकाँ बूझल जाय । प्रायः देखल जाइछ जे बहुधा व्यक्ति विपत्तिकेँ अयला पर ईश्वराराधना करय लगैत छथि जाहिसँ हुनक क्लेश दूर भय जाइन्ह परन्तु ई पर्याप्त नहि अछि । आवश्यकता ई थीक जे ओ एहि बातकेँ ज्ञात करथि जे हुनका ऊपर की विपत्ति अयलैन्ह अछि एवं हुनक कोन शिक्षा ग्रहण करवाक चाहियन्हि ? जाहि बन्धनमे अहाँ जकड़ल छी, ओहि पर क्रोध करव अथवा चिड़चड़ाह बनव व्यर्थ थीक । अहाँकेँ उचित यह अछि जे, अहाँ एहि बातक पता लगावी जे किएक एवं कोन प्रकारेँ एहि विपत्ति-जालमे आबि फसलहुँ अछि । अतएव अहाँ अपनाकेँ दुनियाँक एहि गोरख-धन्धासँ निकलि कय अपन हालतिकेँ बढ़ियाँ जकाँ सोची एवं समझी । अहाँकेँ अनुभवरूपी विद्यालयमे हठी बालकक भाँति नहि रहवाक चाही, प्रत्युत् धैर्य एवं नम्रताक संग दुःखक पाठकेँ सीखवाक चाही जे अहाँकेँ हितक लेल एवं अहाँकेँ उच्च एवं उन्नत अवस्थामे पहुँचयवाक हेतु देल जाइत अछि । कारण जे, विचार कयलासँ ज्ञात होइत अछि जे दुःख वा आपत्ति एहि संसारमे कोनो अनन्त या अपरमित शक्ति नहि अछि किन्तु मानुषी अनुभवक एक क्षणिक अवस्था अछि एवं एहि कारणसँ जे व्यक्ति सीखय चाहैत छथि हुनका हेतु ई गुरु या शिक्षकक तुल्य अछि । संसारमे दुःख वा आपत्ति अहाँसँ कोनो पृथक् वस्तु नहि थीक, किन्तु अहाँक हृदयक एक अनुभव अछि एवं जखन अहाँ धैर्यक सङ्ग अपन हृदयक सुचारु रूपेँ परीक्षण करव एवं ओकरा सन्मार्गपर लायव त अहाँकेँ धीरे-धीरे एहि बातक पता लागि जाएत जे विपत्ति किएक आयल एवं कोना आयल ? एवं अहाँ ओकर जड़ि मूलसँ नाश कय सकव ।

प्रत्येक दुःख एवं विपत्तिक इलाज कयल जाइत छैक और ओ दूर भय जाइत छैक अतः ओ सदैव नहि रहय पवैत अछि । दुःखक जड़ि अज्ञानता थीक अर्थात् संसारक पदार्थकेँ एवं ओकर सम्बन्धकेँ बढ़िया जकाँ नहि बुझवे मूर्खता थीक । यावत् धरि हमरामे एहि प्रकारक अज्ञानता रहैत अछि तावत् धरि विपत्तिक दास बनल रहैत छी । संसारमे जतेक दुःख एवं क्लेश होइत अछि सब अज्ञानताक कारणेँ होइत अछि । यदि मनुष्य दुःख एवं विपत्तिसँ शिक्षा ग्रहण करय त किछु ज्ञान प्राप्त भय सकैछ एवं विपत्तियो स्वयमेव दूर भय सकैछ परन्तु प्रायः लोक विपत्तिसँ शिक्षा नहि ग्रहण करैत अछि एहि हेतु विपत्ति हुनक अनुसरण नहि छोड़ैत अछि एवं ओ ओकरासँ प्रसित रहैत छथि ।

हमरा एक बच्चाक हाल ज्ञात अछि जे रात्रिक समय जखन ओकर माय ओकरा सुतवाक हेतु लय जाइत छल तँ ओ दीपक संग खेलैवाक हेतु

बहु कनैत एवं चिचिआइत छल । एक रात्रि जखन ओकर माय थोड़ेक कालक हेतु एकसर छोड़िकय बाहर चलि गेलि त ओ अज्ञानताक कारणे दीपक टेम पकड़ि लेलक । परिणाम वैह भेल जे होयबाक चाही । अर्थात् ओकर हाथ जरि गेलैक परन्तु ओहि दिनसँ कहियो बच्चा दीपक सङ्ग खेलैबाक इच्छा नहि कैलक । ओ स्वयं अपनहि अज्ञानतासँ आज्ञा-पालनक पाठ सीखि लेलक एवं ओकरा ई ज्ञान भय गेलैक जे आगिक गुण जरैबाक छैक । एही एक घटनासँ सम्पूर्ण दुःख एवं विपत्तिक गुण, स्वभाव, ज्ञान एवं अन्तिम परिणाम ज्ञात भय जाइत अछि । जाहि तरहें बच्चा अग्निक अनभिज्ञताक कारणे दुख उठौलक, ओही तरहें पैघ अवस्था वाला बच्चा एहि कारणसँ दुःख उठवैत छथि कि जाहि वस्तुक हेतु ओ कनैत छथि एवं जकरा लेबाक हेतु ओ उद्योग करैत छथि ओकर गुण एवं स्वभावसँ ओ अपरिचित छथि एवं एही लेल जखन ओ वस्तु हुनका प्राप्त भय जाइत अछि त हानि उठवैत छथि । अन्तर एतवे छैक जे पैघ अवस्थाक बच्चामे दुःख एवं अज्ञानता बहुत जड़ि पकड़ि लैत अछि एवं नुकायल रहैत अछि ।

दुःखक अन्धकारसँ एवं सुख प्रकाशसँ सदैव समानता कयल जाइत अछि एवं एहि समानताक गुप्त रहस्य छैक । असल बात ई छैक जे जाहि तरहें प्रकाश सम्पूर्ण जगतमे पसरि जाइत छैक एवं अन्धकार एक छोट विन्दु छैक वा कोनो छोट पदार्थक परछाही छैक जे अनन्त प्रकारक किछु किरणकेँ रोकि दैत छैक, ओही तरहें उत्कृष्ट सुखक प्रकाश एक निश्चित एवं जीवनप्रद शक्ति अछि जे विराट संस्कारमे पसरि जाइत अछि एवं दुःख स्वयं परिछाहीं अछि जे प्रकाशक किरणकेँ प्रविष्ट नहि होमय दैत अछि । जखन रात्रि होइत अछि सम्पूर्ण संसार अन्धकारमय भय जाइत अछि । खाहे अन्धकार कतबो ने सघन हो परन्तु ओ पृथ्वीक किछुए अंशकेँ भँपैत अछि, शेष सम्पूर्ण प्रकाश प्रकाश रहैत अछि एवं इहो सबकेँ ज्ञात रहैत छैक जे प्रातःकाल प्रकाश भय जायत । अतएव स्मरण राखू जे जखन दुख, शोक एवं विपत्तिसँ घेरल रात्रि अहाँक आत्माकेँ भौँपि लैत अछि एवं अहाँ थाकल-ठेढ़िआयल अनिश्चित मार्गमे ठोकर खाइत फिरैत छी तखन अहाँ अपन निजी इच्छासँ अपन हर्ष एवं आनन्दक अमरिमित प्रकाशक मध्यमे डोलैत छी एवं ओकर परिछाहीं जे अहाँकेँ भौँपि लैत अछि ओ अहोक परछाहीं थीक अन्य ककरहु नहि थिकैक । जाहि तरहें बाह्य अन्धकार कोनो वास्तविक नहि थीक ने ओ कतहु अबैत अछि ने जाइत अछि एवं ने ओकर कोनो स्थायी स्थान छैक, ओही तरहें आन्तरिक अन्धकार कोनो वास्तविक पदार्थ नहि थीक । स्वयं प्रकाशमय आत्मा परसँ ओ ओहिना चल जाइत अछि ।

सम्भव अछि जे किछु मनुष्य ई कहि उठैत छथि जे फेर अहाँ विपत्तिक अन्हार पथसँ कियेक गुजरैत छी ? एकर उत्तर यह छैक जे अज्ञानताक कारण स्वयं एना करब पसन्द कयने छी एवं एना कयलासँ अहाँकेँ सुख एवं दुःख दुनूक बढ़ियाँ जकाँ ज्ञान प्राप्त भय जायत एवं दुःख पड़लाक कारणे फेर अहाँ सुखकेँ अधिक पसन्द करय लागब । दुःख अज्ञानताक कारणे होइत छैक । एही हेतु जखन अहाँ बढ़ियाँ जकाँ ओकरा सोखि एवं बुझि लेब तखन अज्ञानता स्वयमेव दूर भय जायत एवं ज्ञानक प्रकाश ओकर स्थानपर भय जायत परन्तु जहिना एक हठी एवं अवज्ञाकारी अपन विद्यालयक पाठकेँ याद नहि करैत अछि ओही तरहें इहो संभव अछि जे अहाँ अनुभवसँ शिक्षा ग्रहण नहि करी एवं नैराश्य अधकारमे पड़ल रही एवं रोग-शोक एवं निराशाक रूपमे निरन्तर दण्ड भोगैत रही । अतएव जे अपनाकेँ विपत्तिसँ मुक्त करय चाहैत छथि हुनका लचित छैन्ह जे ओ पाठ सीखऽ एवं शिक्षा ग्रहण करवाक हेतु सदैव तैयार रहथि एवं ओहि रीतिक अनुसरण करथि जाहिस ज्ञान, सुख एवं शान्तिक प्राप्ति हो ।

जाहि तरहें कोनो व्यक्ति अपनाकेँ कोनो अन्धकारयुक्त कोठरीमे बन्द कैलिये एवं ई कहऽ लागय जे प्रकाश छैके नहि ओही तरहें सम्भव अछि जे अहाँ सत्यताक प्रकाशके अपना भीतर आवइये नहि दी परन्तु एकर विपरीत जाहि तरहें अन्धकारयुक्त कोठरीमे बन्द भेल मनुष्यो बाहरक प्रकाशकेँ अस्वीकार नहि करैछ ओही तरहें सम्भव अछि जे अहाँ जे अपन आस पास मोह, माया, स्वार्थ, अज्ञान एवं पक्षपातक दिवाल बना लेलहुँ अछि ओकरा ढाहव प्रारम्भ करू एवं ज्ञानक सर्वव्यापी प्रकाशकेँ भीतर आव दीय ।

अपन आत्मानुभवसँ एहि बातकेँ समझवाक कोशिश करू एवं ओकरा सिर्फ काल्पनिक नहि, वास्तविक समझी । विपत्ति थोड़ेक दिनक हेतु अबैत छैक एवं ओ अहीँक जन्माओल थीक एवं अहाँपर जतेक दुख एवं कष्ट आयल अछि ओ सब एक अटल एवं विश्वव्यापीक अनुसार आयल अछि । अहाँ ओकर योग्य छी एवं अहाँकेँ ओकर आवश्यकता अछि । कारण कि ओकरा सह्य कयलासँ एवं ओकरा बढ़ियाँ जकाँ समझि लेलासँ अहाँ अधिक बलवान ज्ञानी एवं सभ्य बनि जायब । जखन अहाँकेँ ओकर बढ़ियाँ जकाँ ज्ञान भय जायत तखन अहाँ स्वयं अपन दशाक सुधार कय सकै छी; दुखकेँ सुखमे परिणत कय सकैत छी एवं अपन जीवनक हेतु आवश्यक सब किछु संग्रह कय सकैत छी ।

अपने के ?

मुनहारि साँभ भय चुकल छलैक । भरिदिनुका विश्रान्त, थाकल-ठेहिआयल प्राणी—मात्र विश्रामक इच्छुक छल । क्रमिक वातावरण ततवा स्तब्ध भय चुकल छलैक जे यदि अपनहि हाथसँ गोटेक सूइया खसि परैत त ओकर शब्द स्पष्टतः कर्णगोचर होइत । एहि मूक वातावरणमे हम अपन मित्रक संग मौन संभाषणमे लीन रही । कनेक कालक बाद बुझना गेल जेना हमरा संबोधन कय केओ कहैत हो—अरे, अपनेसँ हमरा साक्षातकार कोना होइत । हमरा त' लोक निर्जीव बुझैत अछि ने—निष्प्राण, निश्चेष्ट, आ जानि ने की की ! मुदा हम त जीवधारियोसँ वेसी जीवित छी, आ सजीवोसँ अधिक सजीवता अछि हमरामे । हँ, एतबा अवश्य जे हम जीवित छी, किन्तु ओकरहि लेल जे हमरामे जीवन देखय चाहैत अछि । सप्राण त छी हम, किन्तु ओकरहि लेल जे हमरामे प्राणक अनुभव करय चाहैत हो । आ चेष्टा ? ओकर त' हम निर्माता छी । लोक ई विसरि जाइछ जे प्राण, जीवन, आदिक प्रेरणा स्रोत हमही छी । हँ, ई एकटा अवश्य जे हमरासँ सभ गप्प नहि कय सकैछ, जावत कि ताहि योग्य अपना मे ओ क्षमता नहि लाओत ।

ऊपरसँ त हम ने कोनो सुन्दरे छी आ ने रसगरे तखन लोक हमरासँ मित्रता करत किएक ? आ' एहि हेतु हमरा ने कनिओ हड़बड़ी अछि आ ने कोनो चिन्ता । अरे, काल अनन्त छैक आ' वसुन्धरा बड़ पैघ छैक । आइ ने काल्हि लोककेँ हमरासँ मैत्री करय पड़तैक । हँ, हमरासँ जे आत्मतः परिचित छथि तनिकासँ हमरा तादात्म्य सम्बन्ध भय जाइत अछि—एक प्राण दू देह । हम एहि अहं-पूर्ण संवाद सूनि कने साकांक्ष भेलहुँ जे ई के महापुरुष थिकाह । हम जा पुष्टितियैन्ह अपने के कि ता ओ पुनः कहय लगलाह : कि अपने वेदव्याससँ भेंट करय चाहैत छी, वाल्मीकिसँ चार्वाक वा कालिदाससँ कि भवभूति, भाष अथवा क्राइस्ट, प्रायड, शेक्सपेयर, होमर, हार्डी, लाओसी लेलिन मार्क्स वा गांधीसँ । अपनेकेँ हम हुनका लोकनिसँ ओहि रूपें साक्षात करा देव जेना प्रायः हुनक निकटतम मित्रहुँ लोकनिकेँ हुनक जीवनकालमे असम्भव छलैन्ह । अरे अपने के हम वाल्मीकिक आश्रम लय चलब

लाओसिक-दर्शन सुनाएब, काइस्टके ई कहैत सुनाय देब जे "Father forgive them, because, they not what they do" अपनेके हम कालिदास कशकुन्तला आ बडैवस्थक लूसीस सेहो भेंट करायदेब ।

हम एहि सोचमे पड़ि गेलहुँ जे ई कोन महाशक्ति जे इच्छित रूपसँ आम-निव्रत करैत छथि जे जनिकासँ गप्प करबाक हो तनिकासँ गप्प कराय देब आ जनिक दर्शन करबाक हो तनिक दर्शन । हम कने आओरो साकाँच भेलहुँ जे ई के । सोलुफ प्रश्न करय लगलिअन्हि जे अपनेक परि...कि ओ पुनः कहय लगलाह :

अरे अपने आस्तिक छी वा नास्तिक । यदि अपने आस्तिक छी त अपनेके धर्मक कथा कहब । यदि नास्तिक त हम तकरहि हेतु अपनेक तर्कना शक्ति बढायब । आ यदि अपने अपनाके कामी कही त किछु काम कलाहिक चर्चा हो । अपने मार्क्सवादी छी वा गांधीवादी त किछु ओहीपर चर्चा हो । अपने साहित्यिक छी वा शुष्क दार्शनिक ? अपने जाही रूपमे हमरा देखय चाहब हम ताही रूपमे भेटब ।

हमरा त अजगुत लागि गेल जे ई के थिकाह जे भूत-भविष्यक साकार निराकार सभपर एके तरहे गप्प करबा ले तत्पर बुझना जाइत छथि । हम हिनक परिचय बुझवा ले आओरो वेशी उत्सुक भेलहुँ आ जा पुछियैन्ह जे अपने के...कि फेर प्रारम्भ कएलन्हि :

अपने श्रीहीन छी वा श्रीमान, अपनेक समाज घृणित अछि वा स्तुत्य, अपने प्रायः अपन जीवन पर्यन्त अनका बहियो ने कहि सकबैक किन्तु हम त' युग-युगान्तर तक अपनेक यशगाथा कहैत रहबैक । हँ, एकटा अवश्य जे अपनेक अधलाहो बात हम अवश्य कहबैक जाहिसँ अपनेक अगिला पीढ़ी सचेत भय सकय तथा ओहिसँ बाँचि सकय—अपनहुक कुकर्मके अपन सुकर्मसँ धो सकय ।

हमरा त' संसार-समुद्रक ज्योतिर्स्तम्भ बुझू । एतय त' अज्ञान, अहमन्यता आदिक अथाह समुद्र छैक ने । हमरा त हेरायल भोतिआयलके ठेकानपर आनय पड़ैत अछि । हँ, हमरामे तिमिराच्छन्न करबाक सामर्थ्य सेहो अछि ।

जे हमरा कलुषित कय देखय चाहताह हुनका त' हम कलुषितोसँ वेशी कलुषित बनाय देबैन्ह । हमरा त बुभू स्फटिक । ओकर नीचामे जाहि रंगकेँ राखि देबैक स्फटिकक रंग तेहने भय जयतैक । किन्तु भेद एतबा अवश्य जे, स्फटिक रंगसँ प्रभावित होइत अछि, आ हम अनका प्रभावित करैत छियैक । अपनेक भाव-भंगिमासँ बुझना जाइछ जेना अपने किछु पूछय चाहैत छी । से जे पुछबाक हो से निर्विकार भय पूछू । हमरासँ केओ लाज नहि करैछ । हम ने ककरो अल्पज्ञतापर हँसिते छियैक आ ने लाठिक हाथें ककरो किछु सिखवितहि छियैक । हँ, प्रत्येक प्रश्नक उत्तर अवश्य रखने रहैत छियैक । जकरा-इच्छा होइत छैक से नाना तरहक शंकाक-समाधान बाहर कय लैत अछि । हँ एकटा बात त कहवे ने केलहुँ—गरीब, धनिक, बूढ़, नेना, युवक, युवती जे चाहथि सभ हमरासँ मित्रता कय सकैत छथि—कोनो प्रतिबंध नहि ।

हमरा त' हिनक रूपक पते ने लागे जे ई थिकाह के—ससीम वा निस्सीम, साकार वा निराकार । हम यैह सभ सोचैत रही कि जोरसँ कोनो शब्द भेलैक—आ हमर तंद्रा टूटि गेल । देखल त “मार्क्स”क “दास कैपिटल” हाथसँ छुटि खसि पड़ल छल । हम ओकरा उठबैत, सम्हारैत ठाढ़ होमय लगलहुँ कि लाइब्रेरीक पीउन कहय लागल—बाबूसाहेब बजैत छैक—हम अहींक हेतु ठाढ़ छलहुँ, । देखल जे कने ओंघाय गेलहुँ तें उठाएव उचित नहि बुझना गेल । किन्तु बाद अपने आइ सपनाइत छलहुँ रहि-रहि कै जेना ककरो पुछैत छलियैक जे “अपने के” । हमरा किछु नहि फुरल जे एकरा की उत्तर दियैक जे हम ककरा पुछैत छलियैक अपनेके..? हम एखनहु नहि ने बुझैत छियैक जे हम ककरा पुछैत छलियैक । अपनहि लोकनि कहू जे एकांत पुस्तकालयमे हम कनिका पुछैत छलियैन्ह—“अपने के” ।

औनपी

ननकिलाठक नूआमे कतौ चेथड़ीक अवंच वहि, ठाम ठीम गीरह
बान्हल; ऊपरसँ आध इंच मैल जमल, चलवा काल फट् फट् करैत
माथपर दूटल छितनीमे कनफुट्टा टारा आ, बाँसक फोंफीक बनल
असेरा, पौआही, अधपै आहि अंगने-अंगने पुछारी करैत—गिरह-
थिनी, तेल लेथिन, कनियाँ तेल लेवै, ल' लिअ ने बच्चाकेँ उगारै
ले, कनिँ उगरलैए.....

सुनैत छी, औनपी गाछ हंकैत अछि, गोर पचासेक मृतात्माक जीह डोकामे
ठूसि कए इजराहा महारपर गाड़ने अछि—हकैल डाइन अछि, मार-सम्हार
दुनू जनैत अछि, संगहि शनिक नजरि सेहो छैक। निस्सनसँ निस्सन घरमे
नहि जानि कोन बाटेँ पैसि कए लोककेँ पाचि दैत अछि, घरमे सुतू वो बहरी
जँ नवमी दशमीक समय रहौक तँ टीक धरि अवस्से छोपा जाएत; कानक
जड़िमे कतबो ने दीपक मामरि पोचकारि लिअ, कोनो असरि नहि करत।
जाहि बाड़ी-भाड़ी दिस ओकर नजरि चलि गेलैक बुम्भू जे ओहिमे आगि
बरसि गेल, पाथर खसि पड़ल, जाहि परिवारसँ ओकरा मन-भोटाव भेल,
बुम्भू जे ओहि परिवारमे ढेबाहि लागि गेल। औनपीक नामक स्मरण मात्र
भेलासँ यदि अहाँक माथ लाबा-फरही नहि भेल तँ इएह बुम्भू जे अहाँपर
बुच्चुनदाइ सहाय छथि।

ओहि दिन 'इन्टरव्यू'सँ फिरल अबैत एक मित्र बड़े गम्भीरभावसँ कहलैन्हि,
'बुम्भू कि ने, आइकाल्हि भारतवर्षमे रहबाक हो तँ दुइए भ' कए रही—की
मौगी भ कए नहि तँ छोटका भ' केँ; तँ अनायास औनपी मोन पड़ि गेल।
ओ तँ शुद्ध मौगी थीक आ छोटका लोक सेहो, मुदा सुविधामे सुविधा तँ
एतवे देखै छी जे घरक टाट भंभर-भंभर भ' गेलाक कारण सूर्यक दर्शन
सबसँ पहिने ओकरहि होइत छैक, अन्नक अभावमे भने ओ कतोक दिन
कटहरक मोंछी, बड़हरक फूल आ' बिसौंड़े पर जीवन निर्वाह करैत अछि
आ' कोल्हुक घर-घर, घोंघों सुनि अपन रागात्मक जिज्ञासा शान्त करैत

अछि । ननकिलाठक नूआमे कतौ चेफड़ी अबंच नहि, ठाम-ठोम गीरह, बान्हल, उपरसँ आध इंच मैल जमल, चलबाकाल फट् फट् करैत, माथ पर दूटल छितनीमे कनफुट्टा टारा आ' बाँसक फोंफीक बनल असेरा, पौआही, अधपै आदि—अंगने-अंगने पुछारी करैत—‘गिरहथनी, तेल लेथिन, कनियाँ तेल लेबै, ल’ लिअ ने बचाकेँ उगारै ले, कनिँ उगरलैए.....हे, गोटेक काँचो-कोचिल आम होइन त देखुन तेतराकेँआ’ गिरहथनी मस्त हथिनी जेकाँ अगराइत—‘नै लेबै आइ.....काल्हि ए तँ बौआ मिल परसँ एक कन्टर अनलखिनहें ।’ पुनः धिया-पुता दिस कनखी-मटकी मारैत—‘आम ? ऐ बेर तँ चटनिआँ नै जी पर गेलए अखन धरि.....’ तेतराकेँ रस्ता-पेड़ा कतो खसल-पड़ल आमक टिकला भेटि जाइ छै तँ बड़े प्रेमसँ दकरए लगैत अछि—‘माए, आइ कदीमाक तीमन करिहें..... माए ने, हे अपना बड़दकेँ भरि देह किदन फड़ि गेलैए ।’ आ’ औनपी घूरि-फोरि साँझकेँ आंगन अबैए तँ मोन जेना औनाए लगै छै, ‘भरि दिनमे आठ टा पैसा, एक पौआ गहरि, एक कनमा मेरखी ! मोन होइ छै, कोल्हुमे आगि लगा दी, बड़दके कांचे गीड़ि जाइ; जीवक जंजाल तेतरा !

जावत् हराहीपर मिल नहि फुजल छल, औनपीक घरक चनमारमे बिस-हथी साड़ी सुखाइ’ छलै, सीथमे एक कनमा सिनूर लेपल रहै छलै दस-बीस लगानो भिड़ानी छलैक ।

मुदा भिखारीसाहुकेँ तँ चलनिआँ घेरने रहैन, औनपी बारम्बार मना करैतरहि गेलै, परन्तु ओ कबिरहा मत मानिए लेलक आ’ ओही दिनसँ घरक भाभंस जे उठल से उठले रहि गेल । बरख दिनक भीतर चारि टा सोन सन बेटा आंगन सुन्न कऽ देलकै आ दोसर बरख साहुजीक अपनो टिकस कटि गेलैन्ह । सौंसे गाम औनपीक ‘गुन’ देखार भ’ गेलैक । बाड़ी-भाड़ी चूनक टोका लागल खापैरसँ तोपल जाए लागल, चार सब हरकछुआक पीठ सन भए गेल । औनपीक चाल पबितहिं धिया-पूता कोठीक दोगमे शिथिल भए बैसल रहैत अछि, कनियाँ-बहुरिया दूबर कपड़ासँ सीथ भँपने रहैत छथि ।

मनटुनकेँ दू बरखसँ पँजरसट्टा रोग घेने छैन्ह, भूपसूकेँ अनेरे माथपर एकटा टेटर भ’ गेलैन्ह, चपरूकेँ एक बरखसँ रतौन्ही हरान केने छैन्ह, फुलसरियाक पेटक सीर मोट भ’ गेलैए, लोक कहै छै कछुबी छिपे, वरौंट

छिपे, हाँसुल के भरि गुँह पपिआहा भ' गेलैए, बिलटू के सहजहि-सहज
छिठौरी भ' गेलैए बुढ़वा आंगुरमे, हरदग कौड़ी बन्हने रहैए । सुकुमारिदाइक
चार पर कदीमा बकनाए गेल, डीहटोलबालीक भरल बाड़ी रामकिंगुनी
सुखराह भ' गेलैन्ह अछि । कहल जाइछ जे ई सब फसाद औनपिएक थीक ।
ओभा-गुणी सब थाकि बैसलाह । गामक काल कंटक थीक औनपी !

भोटहूक्काकेँ अपन तर्कशक्ति पर बड़ आस्था छैन्ह । बेसीकाल लोटकिए
ल' कए बाह्यभूमि दिस विदा होइ छथि आ' लोक पुछै छैन 'कका एतनी जलसँ
कोना... .. ?' तँ तुरत शास्त्रार्थक मुद्रा आबि जाइ छैन्ह—'की प्रमाण
जे हम पोखरि दिस जाइ छी, आ जे हम पानि हेरबए जाइत होइ ? हुनक
पाँच कट्टा धानक बोधामे भरल लागि गेलैन तहिए नीक जकाँ विश्वास भ'
गेलैन जे औनपी निश्चय बदमाश अछि । 'हौ, प्रत्यक्षक प्रमाणे की ? पचासो
दिन गाछ हहाइत सुनलियेक अछि, बटोही सब अपना आँखिसँ ओकरा
चौबट्टी पर पूजा करैत देखलक अछि, चरबाहा सबकेँ घनेरो राति एनमेन
ओहने जनाना अभड़लैए; कोना बुझब फूलि ?.....

भोलीभाक नेना आइ चारि दिनतँ अब-तबमे छैन्ह, वैद्यजीकेँ रोगक कोनो
थाहे-पता ने लगै छैन्ह । औनपी पर साम, दाम, दण्ड, भेद, सब कथूक
प्रयोग कएल गेल, मुदा बच्चाक आँखि नहि फुजलैक, तँ भोलीभाक तामस
एँड़ीस मगजधरि पहुँचि गेलैन्ह, गर्दमगोल करैत लाठी पटकैत औनपीक
आंगनमे ठाढ़ भ' गेलाह, परन्तु लाल-पीअर आँखि एक पलमे उज्जर भ'
गेल । औनपी बीच आंगनमे अर्द्धनग्न पड़लि, मुँहस गाउज-फेनक धारा
वहैत, कोनो सुप्त ज्वालामुखी जेना एकहि बेर जाग्रत भए आगि-छाउर वमन
कए रहल हो ! गे'ड़ जे कां पड़ल बड़द ! ऐंठल-जुठल तेतराक मुँह; भौतिक-
वादी संसारक विभीषिका देखि मोन जेना खट्टा भए गेल होइक ओकर !
सूर्यक लाल-लाल आँखि कोल्हुपर पड़ैत, छी: विज्ञानक युगमे कोल्हु !

वाह रे वाह ! न्यूटन, फराडे, एडोसन आ' मारकोनी सौंसे संसारमे पूज्य
मुदा औनपी, जे विना पेट्रोल, विना इंजिनकेँ गाछ हँकैत अछि तकर एहन
दुर्दशा, एहन अपमान ! प्रश्न उठैत अछि जे औनपी जँ वास्तवमे गाछ
हँकैत अछि तँ सरकार किएक ने गाछ हँकवाक ट्रेनिंग स्कूल खोलि ओकरा
शिक्षिका नियुक्त करैत अछि ? 'हेलीकोप्टर'क पाछाँ हेबाक की प्रयोजन ?
मुदा से होएत कोना ! वनिस्पतिशास्त्रक जड़ि जे कटि जाएत, रेलक पटरीमे
जंग जे लागि जाएत आ 'एयर इण्डिया इन्टरनेशनल' फेल जे क' जाएत !

यात्रो

यत्र तत्र सर्वत्र

विद्यापति कने अगुता गेलाह—चोआकका ओहि दिन सांभुक बइसाइमे नोसि लइत बाजल रहथि ।

तइपर नोखेतालकेँ हँसी लगलइ, तिरपितक बाँहिकेँ उसकवैत कहलकइन—
काल्हि बुझि पड़इए अहाँ सिनेमा गेल रही ! तिरपित मुसकी मारइत नोखेकेँ
कहलकइ—आहि रे बा ! नूतन, चाँद उस्मानी आ कि कलनाकार्तिककेँ
यदि विद्यापति देखि पवितथीन त आरो दशगुना वेशी सोदगर गीत हमरा
लोकनिकेँ परि लगितए कि.....नहि चोआ कका ? सएह त कहलिअहु—
चोआकका धोतीक खूटसँ नाकक दूनू पूड़ा साफ कएलन्हि । नोखेक दिशि
गर्दनि नमरा केँ कहलथीन—विद्यापति जँ अजुका युगमे जन्म नेने रहितथि
आ कने बंबइ—कलकत्ता—दिल्ली क उच्चवर्गीय आ कि मध्यवर्गीय तरुण-तरुणी
दलकेँ भावानुभाव निमग्न देखने रहितथीन त
नोखेताल नमरिकेँ अइपर चोआककाक दूनू पएर छूवि लेलकइन, बाजल —
बूझल, चोआकका बूझल !.....

केरलमध्य कैथोलिक पादड़ी लोकनि लाख जोर लगओलन्हि-शिक्षा विधेयकेँ
ओतुक्का विधायक मंडल छोड़लकइन नइ, पास कराइए टा लेलकइन !
कांग्रेसी-प्रजासमाजवादी, मुस्लिमलीगी क्रिश्चियन मिशनरी...परस्पर विरोधी
जमात एहि अवसर 'अग्निश्च वायुश्च' भ गेल रहए । एह, मुदा कम्युनिस्टो-
लोकनि अद्भुत चमत्कारक परिचय देल !! २६ अगस्तकेँ त्रिवान्द्रम
(तिरुवनन्तपुरम्) शहर सरकार-विरोधी प्रदर्शनक लेल सिंहेश्वर स्थानक
मेला भ गेल बुझू.....ताहिसँ सएगुना वेशी विकट बुझू...एहना स्थितिमे
आन आन राजधानी ने जानि केहेन केहेन दुर्घटनाक क्षेत्र भेल रहितए !
लाठी, गोली, अश्रुगैस रोड़ा-पाथर डेप-चेप...कतेकोक कान-कपार फुटितइ,
प्राण जइतइ कतेकोकराजपथ रक्तरंजित होइत.....मुदा ई सभ किच्छु
नइ भेलइ । उनटे, प्रदर्शनार्थी लोकनिक सौकार्यक हेतु सरकारक दिशसँ
ट्रेन-बस-नाव आदिक स्पेशल प्रबंध क दे गेलइन ! : ..लालभाइ लोकनिक
ई नवका तंत्र-मंत्र सँसे ससारकेँ विस्मित कए रहल अछि, कांग्रेसक महामंत्री
श्रीश्रीनारायणकेँ भरल सरकारक एहि इन्द्रजालक अंतरालमे निखिल विश्वक
सर्वनाश साफे सूझि रहलइन अछि !! आव ओ साँभ-प्रात पाठ करताह —

या त्वरा द्रौपदीबाणे या त्वरा गजमोक्षणे ।

मथार्त्ते दुर्दशाग्रस्ते सा त्वरा कृगता हरे ॥

शेख अब्दुल्ला मने आव जल्दिये मुक्तिलाभ करताह...की ममर्खा नीक जकाँ छुटलइन ? आ कि बहरेता तइखन नेहरूजी कोना जड़ी बान्हि देखिन बाहुमूलमे ?

मैथिली कोनो स्वतन्त्र भाखा नहि थीक...ओ हिन्दीक कोरबच्चा थीक...ओ बोली त नहि मुदा हिन्दीक 'विभाषा' थीक...

—मानल, हँ मानि लेल ! आवहुँ त हजूरक कृपाकटान सगिया कऽ एहि अभागलिपर पड़उक !

कर्ज...कर्ज...कर्ज . आओर ऋण...आओर पईच ..आओर उधार... करोड़क करोड़ डालर च ही ! अरबक अरब डालर चाही...पाउण्ड सेहो चाही ! रुबल सेहो . नेहरूजी, दोहाइ सकार ! आवहुँ भाभट समेटू ! एना बहिया धरि खेपबइ मालिक ? अपना देशमे सरिपहुँ की कोनो साधन छइहे नइ ?

आसिन

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

आयल आसिन मास मनोरम
उमड़ल नव नव आश ।
अति मन्द मन्द बहि रहल पवन
पवनक गति पर
श्यामल श्यामल
मृदु शस्य राशि अञ्जि भूमि रहल
भुकि भुकि धरणिक पद चूमि रहल
से भूमि पड़ै जे
प्रकृति पहिरि चट हरित वसन,
लट पट, चंचल,
शंकित मन;
पंकिल पथ पर पद
बढ़ि रहल निरन्तर
क्रम पर क्रम चलि रहल
दूर तर प्रियतम घर
मुख अरुणिम-प्रभ

उमड़ल अन्तर मे मधुर मधुर
आनन्दक पूर्वाभास
आयल आसिन मास मनोरम
उमड़ल नव नव आश ।

जन

पुलकित मन
कै श्रद्धा सँ पितरक तर्पण
पुनि भक्ति भाव सँ नत शिर भ
माताक चरण पर
कै अर्पण
किछु भाव-सुमन
गद् गद् स्वरसँ अछि गावि रहल,
स्वर लहरी पर साकाँच श्रवण,
उत्सुक लोचन

स्मृत-पट पर अंकित
स्वर नर्तन

क्यौ

जय जय भैरवि असुर भयाउनि
ग वि गाबि

सुधि विसरि अपन

दै ताल मधुर

किछु धिर क थिरकि

अछि नाचि रह ।

प्रमुदित अग जग

शरदक निशि-छवि

जगमग जगमग

पुलकित धरणी

विकसित शतदल

उल्लसित हृदय आकाश

आयल आसिन मास मनोरम

उमड़ल नव नव आश ।

वार्षिक सूची १९५६

शीर्षकक कथानुसार

कथा

कथा	लेखक	पृष्ठ
आज्ञा	हंसराज	२६
कपालिक	ललित	५७
किरतनिष्ठा	राजकमल	१३
को कहू	कल्याणशरण	३५
कोपड़	राजकमल	१६५
कृष्णाष्टमी	प्रो० श्रीकृष्णमिश्र	२७३
गैयाक माँओस	सोमदेव	३३६
गिरगिट	मायाकान्त	१२५
चन्नर दास	राजकमल	२५८
चुड़ैल	प्रो० रमाकान्त	१६
छोटकी काकी	अष्टावक्र	२१४
छोटछोन व त	सुधांशु 'शेखर' चौधरी	१५
जागो	लक्ष्मीनारायणठाकुर	१०६
टूटल तार	रत्नेश्वरभा	२६७
तीन वरख केर तीन दिन	जयानन्द	३७३
दुइ चित्र	आद्याचरणभा	१६५
न्याय	सोमदेव	१३४
प्रतिनिधि	ललित	३०१
वतहा	हंसराज	२६३
भालसरीक माला	हंसराज	१३०
भावु कृता	प्रो० श्रीशैलेन्द्रमोहनभा	१७१
मनचनमाक डीह	लक्ष्मीपतिसिंह	५५२
मनुक्खक जीवन	योगानन्दभा	५१
मैरिज-स्कॉलरशिप	जयानन्द	१४५
रक्त-दान	प्रो० रमाकान्त	३३२
रिक्शावला	कल्याणशरण	३३५

कथा	लेखक	पृष्ठ
लता	रामचन्द्रभा 'सुमन'	३५१
लेखनीक मृत्यु	कृष्णमोहनप्रसाद	१७४
ब्रह्माक शाप	हरिमोहनभा	२८७
ब्रह्मानन्द	राधाकृष्ण	३७७
सकुरी टीशन भाबि गेल	अरविन्द	१८३
समय जे नहि देखाबय	लक्ष्मीपतिसिंह	८५
साहेब	बिनोदबिहारीवर्मा	१३८
सुकनी	उमानन्दसिंहभा	४५

कविता

अमर विभूति	भवनाथ भा	१५०
ई दुइ रूप	बिनोदानन्दभा	३७६
एक चित्र	प्रवासी	३०८
कविता	पं० बदरीनाथभा	५
गलीक कुकुर	सुन्दरभा	६६
गामक भूत	आद्यानाथभा	१५०
गीत	कविचूड़ामणि 'मधुप'	६
गीत	रघुनाथसिंहठाकुर	१५०
प्रकृति सुन्दरी	प्रो० शैलेन्द्रमोहनभा	३०७
प्रवासीक प्रलाप	राजकमल	३४८
ब्रह्माक थान	निरंकुश	२१२
बाढ़ि	आनन्द	३७५
बाल-विवाह	कविचूड़ामणि 'मधुप'	१११
भादव	चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'	३०५
भ्रान्त कविसँ	रामदेवभा	३४८
माटिक महादेव	काञ्चीनाथभा 'किरण'	३४७
मिथिलाक प्रति	काञ्चीनाथभा 'किरण'	११२
युगचक्र	चन्द्रनाथमिश्र	६५

कथा	लेखक	पृष्ठ
लघु गीत	इन्दु	२६७
वर्षा मंगल	दीपक	२१३
विद्यापतिक पद	परमानन्दपाण्डेय	१८२
विद्यापतिक प्रति	सुरेन्द्रमिश्र	१४६
स्मृति	माण	२६७
स्वागत गीत	प्रो०सुरेन्द्रभा 'सुमन'	३४६

आलोचना-लेख-यात्रावर्णन

आलोचना : एक दृष्टिकोण	काञ्चीनाथभा 'किरण'	१५१
कथा-विशेषांक : एक दृष्टि	सरस-हृदय	११३
कविवर चन्दाभा	प्रो०जयदेवमिश्र	६४
कविवर हर्षनाथ भाः एक अध्ययन	परमेश्वरमिश्र	१७७
कृष्णकाव्यक प्रचाराभाव	काञ्चीनाथभा 'किरण'	७
काशीसँ विंध्याचल	रामकृष्णभा 'किसुन'	३२६
गुल्लीक यात्रा	श्रीश्यामानन्द	२४१
गोविन्ददास	देवेन्द्रनारायणभा	३१५
तुलसीक मानसमे दही-माछ	यश्वम्	२३
द्वितीय पञ्चवर्षीय योजना	प्रो०गोविन्दमाधवभा	३१५
पारिजात हरण	प्रो०जयधारीसिंह	६६; २१६
महाकवि विद्यापति	डा० रामचन्द्रमिश्र	३४२
मैथिली साहित्यक विशदता	हरिनाथमिश्र	३१२
शरत्पूणिमा ओ ताजमहल	प्रो०शैलेन्द्रमोहनभा	६६
शरद्-कविता: एक आलोचना	काञ्चीनाथभा 'किरण'	३६५
दर्शनदास : एक जीवनी	जनार्दनशर्मा	२७२

बाल-मंडल

अन्नक प्रभाव	मायानन्दमिश्र	१०५
भोटिया पाकड़ि	विजयनाथ	३५८

परमानन्दपाण्डेय
प्रवासी
बदरीनाथभा
भवनाथभा
मणि
कविचूडामणि 'मधुप'

रघुनाथसिंहठाकुर
राजकमल
रामदेवभा
बिनोदानन्दभा
प्रो०शैलेन्द्रमोहनभा
सुन्दरभा
प्रो०सुरेन्द्रभा 'सुमन'
सुरेन्द्रमिश्र

विद्यापतिक पद १८२
एक चित्र ३०८
कविता ५
अमर विभूति १५०
स्मृति २६७
{ गीत ६
बालविवाह १११
गीत १५०
प्रवासीक प्रलाप ३४८
भ्रान्त कविसँ ३४८
ई दुइ रूप ३७६
प्रकृति सुन्दरी ३०७
गलीक कुकुर ६६
स्वागत-गीत ३४६
विद्यापतिक प्रति १४६

आलोचनादि

काश्चीनाथभा 'किरण'
प्रो. गोविन्द माधव भा
जनार्दन शर्मा
प्रो०जयदेवमिश्र
प्रो०जयधारीसिंह

देवेन्द्रनारायणभा
परमेश्वरमिश्र
यश्वम्
रामकृष्णभा 'किसुन'
डा० रामचन्द्रमिश्र
श्यामानन्द
प्रो०शैलेन्द्रमोहनभा
'सरसहृदय'
हरिनाथमिश्र

{ कृष्णकाव्यक प्रचाराभाव ७
आलोचना : एक दृष्टिकोण १५१
शरद-कविता; एक आलोचना ३६५
द्वितीय पञ्चवर्षीय योजना ३५५
श्रीदर्शन दास: एक जीवनी २७२
कविवर चन्दाभा ६४
{ पारिजातहरण ६६
पारिजातहरण ११६
गोविन्ददास ३१५
कविवर हर्षनाथ भा: एकअध्ययन १७७
तुलसीक मानसमे दही-माछ २३
काशीसँ विध्याचल ३६२
महाकवि विद्यापति ३४२
गुल्लकी यात्रा २४१
शरत-पूर्णिमा ओ ताजमहल ६६
कथा-विशेषांक: एक दृष्टि १११
मैलिने मणि

मोहनजीक पत्र

मोहनजीक पत्र

लिखैत छथि श्री मोहन एहि उज्जर सादा कागज पर
कालेजक प्रथम क्लास छोड़ि
चूड़वालाक दोकान पर जा
अबितहुँ हम भट्टदन आइ 'किरण'
की करू संग अछि टाका नहि
से लिख रहल छी "किरण" हम आती पर मुक्ता मारि मारि
एहि उज्जर सादा कागज पर

छथि श्री देवी आदि शक्ति
हम भक्त अहाँक ओ करब भक्ति
सुनि लियौ हमर दुवारि उक्ति
नहि मिलैत अछि बाबूसँ मुक्ति
से लिख रहल छी 'किरण' हम सब भक्ति भावना टारि टारि
एहि उज्जर सादा कागज पर

लिखैत छलीह श्री सोनदाई-
हम लुटिहारा छी बनियाँ छी-
पर जानि लियए किरण अहाँ-
हम मुक्त नहि नव कनियाँ छी-

जौ सुनता तऽ बाबू हमर
किछु नहि उठारखता हमरा
तैं माँगि रहल छी जमा 'किरण' अपन मूढ़ि गारि गारि
एहि उज्जर सादा कागज पर

किछु दिन 'किरण' अहाँ शान्त रहू
यौवन मदिरा मे खूब बहू
चूड़ी, चट्टी, चोटी टा नहि
लिपास्टिक, स्नो, टिकलियो लाएब

से लिख रहल छी 'किरण' हम सादा-लिफाफ मे भड़ि भड़ि
एहि उज्जर सादा कागज पर

श्री सोनदाई केँ कहि देवैन्हि
नहि नीरस छी नहि धरकट छी
छी समयक फेर मे पड़ल एखन
तैं शय शय हुनक भाषा पर

लिख रहल छी 'किरण' हम हरियर नेवा गारि गारि
एहि उज्जर सादा कागज पर